वास्तुशास्त्रीय त्रैमासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम

(Three Month Certificate Course in Vāstu Śāstra)

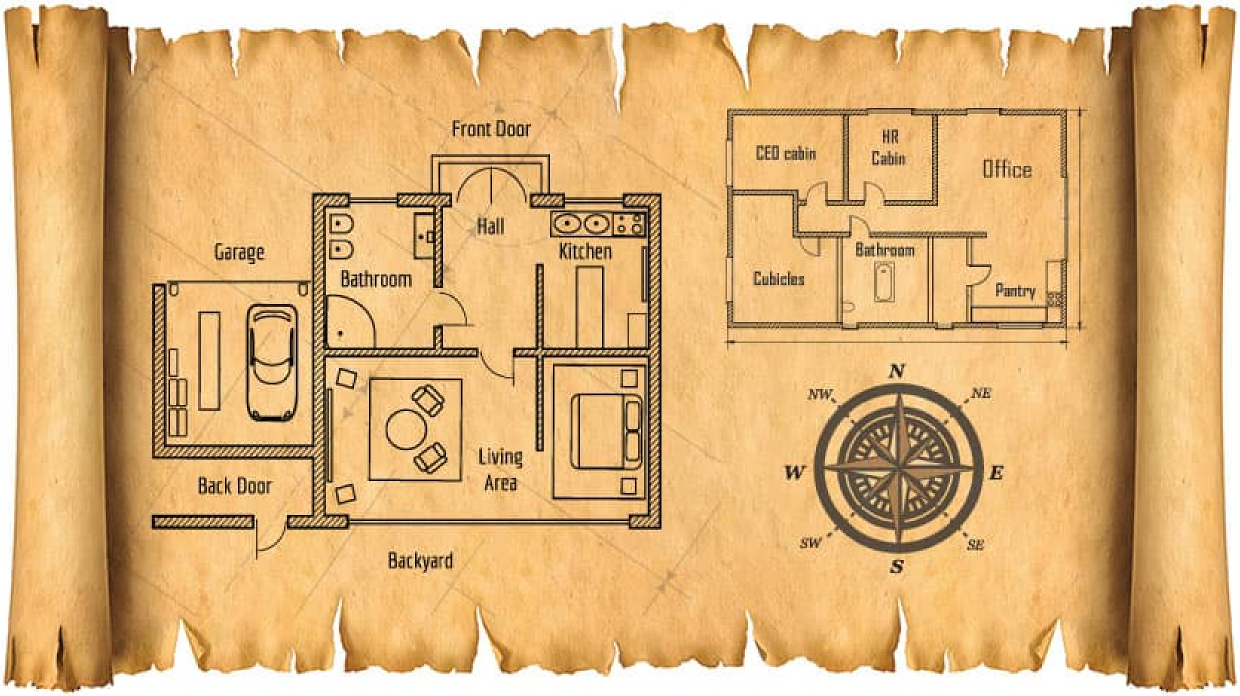

ऑनलाइन संस्कृत प्रशिक्षण केन्द्र

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी-२२१००२

समन्वयक
प्रो. अमित कुमार शुक्ल
ज्योतिष विभागाध्यक्ष
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

सह-समन्वयक
डॉ. मधुसूदन मिश्र, डॉ. राजा पाठक
सहायक आचार्य
ज्योतिष विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

पाठ्यक्रम परिचय

भारत में प्राचीन काल से ही वास्तुशास्त्र को विशेष महत्व दिया गया है। यहां के वास्तुकला जैसे कोणार्क का सूर्य मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर, गुजरात का सोमनाथ मंदिर, अजंता, एलोरा आदि ने समस्त विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेदों में इसका प्रमाण मिलता है। वेदों के उद्भव के बाद वेदांगों की रचना की गई। इनमें वेदांगों में ज्योतिष शास्त्र के अंतर्गत वास्तुशास्त्र को विशेष स्थान दिया गया।

इस शास्त्र का महत्व इस बात से भी परिलक्षित होता है कि इसे उपवेद के रूप में स्थान मिला। प्राचीन भारतीय वास्तु शास्त्र तीन भागों में परिलक्षित होता है। प्रथम देवालय वास्तु, द्वितीय नगर वास्तु तथा तृतीय आवासीय वास्तु। नगर वास्तु के अंतर्गत नगर निर्माण के सिद्धांतों को महत्व दिया जाता है, वहीं देवालय वास्तु में मंदिरों के निर्माण एवं इसके बनावट तथा शिल्प के संदर्भ में विचार किया जाता है। आवासीय वास्तु मनुष्य के निवास स्थान को पंच तत्वों के अनुकूल बनाने का एक माध्यम है।

आचार्यों ने मानव के निवास स्थान को विशेष महत्व देते हुए पंच तत्वों के साथ समन्वय कर इसे स्थापित करने की दिशा में विशेष प्रयास किया एवं इसके ज्ञान पर विशेष बल दिया। यदि वास्तु अनुकूल हो यानी पंच तत्वों के साथ गृह का समन्वय उत्तम हो तो गृह निश्चित ही सुख एवं समृद्धि तथा उत्तम स्वास्थ्य को देने वाला होता है, परंतु वास्तु की अज्ञानता के कारण यदि गृह में पंच तत्वों का समन्वय सही प्रकार से ना किया जाए तो विविध प्रकार की समस्याएं मानव जीवन में उत्पन्न होती है।

वास्तु शास्त्र के इस पाठ्यक्रम में इन्हीं बिंदुओं पर बल देते हुए प्रत्येक जनमानस को इससे परिचित कराने के लिए तथा इसके मुख्य अवयवों के ज्ञान के लिए इस पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। यह पाठ्यक्रम चार पत्रों में विभक्त है। प्रत्येक पत्र १०० अंक के हैं, जिसमें सिद्धांतों के प्रतिपादन के साथ-साथ इसके प्रायोगिक विधियो का अध्ययन हम कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

वास्तुशास्त्र प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम के निम्नलिखित उददेश्य हैं-

1- वास्तुशास्त्र के प्रति जनजागरुकता उत्पन्न करना ।

2- वास्तुशास्त्र के व्यावहारिक पक्षों से जन सामान्य को लाभान्वित करना।

3- वास्तुशास्त्र के प्रति विद्यमान भ्रामक अवधारणाओं को दूर करना ।

4- वास्तुशास्त्र के वैज्ञानिक पक्षों को भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरुप विश्व पटल पर स्थापित करना ।

प्रथम पत्र (वास्तु शास्त्र का परिचय)

पूर्णांक - 100 **उत्तीर्णांक - 36**

शीर्षक	पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटे में)
वास्तुशास्त्र का परिचय	• वास्तुशास्त्र का परिचय • वास्तुशास्त्र भेद • वास्तु का इतिहास	३
वास्तुशास्त्र के प्रमुख आचार्य एवं उनकी कृतियाँ	• वास्तुशास्त्र के प्रमुख ग्रंथ यथा- समरांगण सूत्रधार, मयमतम, वास्तु रत्नाकर, बृहत् संहिता, अपराजित पृछा आदि का परिचय। • वास्तु शास्त्र के प्रमुख आचार्य- मय, भोजराज, विश्वाकर्मा आदि	२
वास्तुशास्त्र के वैज्ञानिक पक्ष	• वास्तुशास्त्र एवं सौर विज्ञान • वास्तु एवं विज्ञान	२
वास्तु एवं पंच महाभूत का समन्वय	• वास्तुशास्त्र एवं गुरुत्वाकर्षण • वास्तुशास्त्र एवं पंचमहाभूत यथा- पृथ्वी, जल, अग्नि	२

वास्तु एवं ज्योतिष का अंतः सम्बंध	• वास्तु शास्त्र के विविध प्रभाग • वास्तु शास्त्र में मापन इकाई • काल की विविध इकाइयाँ	२

द्वितीय पत्र (वास्तु शास्त्रीय विविध चक्र एवं ज्योतिषीय विचार)

पूर्णांक - 100 **उत्तीर्णांक - 36**

गृहवास्तु के प्रमुख आधार	• दिशा • काल • स्थान	१
भूमि चयन विचार	• भूमि चयन हेतु प्रमुख मापदंड • विविध वर्णों के वास योग्य भूमि • व्यापार तथा वास अनुकूल भूमि चयन के माप दंड	१
भूमि के विविध भेद	• भूमि के वर्ण का निर्धारण • वर्ण परत्वेन भूमि की मैत्री	१
प्लव विचार	• भूमि के उत्तर, दक्षिण, पूर्व तथा पश्चिम में प्लव विचार। • प्लव का फल • प्लव जनित दोष एवं उनका निवारण	१
भूमि के शुभाशुभ विचार	• शुभ भूमि के लक्षण • अशुभ भूमि के लक्षण • वनस्पतियों के द्वारा भूमि के शुभाशुभ लक्षण • गंध के अनुशार भूमि का शुभाशुभत्व विचार • स्वाद के अनुसार भूमि का	१

	शुभाशुभत्व विचार आदि	
भूमि दोष तथा उनके फल	• आकृति के अनुसार भूमि दोष • गजपृष्ठ आदि भूमि के लक्षण एवं उसका फल	१
भूशोधन विधि	• सूत्र न्यास • शंकु न्यास • भूमिगत अशुभ पदार्थ ज्ञान • द्रव्य लाभ ज्ञान • भू शोधन के विविध प्रकार	१
शिलान्यास विचार	• गृह का प्रयोजन • शिलान्यास का प्रयोजन • शिलान्यास में मुहूर्त्त शुद्धि • शिलान्यास की दिशाएँ • शिला विधान आदि	१
विविध चक्र विचार	• वृष वास्तु चक्र निर्माण विधि • वृष वास्तु चक्र का फल विचार • कुभं चक्र निर्माण विधि • कुभं चक्र फल विचार आदि	१
वाम रवि विचार	• वाम रवि विचार का प्रयोजन • वाम रवि विचार विधि	१
गृहारंभ में लग्न आदि शुद्धि विचार	• मास शुद्धि एवं उसका फल • तिथि शुद्धि • नक्षत्र शुद्धि • लग्न शुद्धि आदि	१
भूशयन विचार	• भूशयन ज्ञान का प्रयोजन • भूशयन ज्ञान की विधि • भूशयन का फल	१

भूमि दोषपरिहार	• भूमि के विविध दोष एवं उनके परिहार	१

तृतीय पत्र (गृह निर्माण एवं गृह आयु विचार)

पूर्णांक - 100 **उत्तीर्णांक - 36**

शीर्षक	पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटे में)
गृह निर्माण	• गृह निर्माण का प्रयोजन • गृह के भेद • गृह निर्माण का फल • विविध प्रयोजनों के अनुकूल गृह निर्माण	१
काकिणी	• काकिणी विचार का प्रयोजन • काकिणी ज्ञान की गणितीय विधि • काकिणी ज्ञान का विविध क्षेत्रों में प्रयोग • विविध आचार्यों के मत से काकिणी साधन • वर्ग विचार	१
दिग्ज्ञान	• दिग्ज्ञान की आवश्यकता • दिग्ज्ञान का महत्व • सूर्यसिद्धांतीय दिग्ज्ञान की प्रक्रिया • दिग्ज्ञान में आने वाले दोष • सूक्ष्म दिग्ज्ञान • चुम्बक से दिग्ज्ञान • विविध आचार्यों के मत से दिग्ज्ञान	१
आय साधन	• आय की उपयोगिता • आय का गणितीय साधन • विविध उदाहरण • आयों के नाम एवं उनका फल • आयों का स्वरूप • विविध वर्णों के लिए विहित आय	१

	• सबके लिए प्रशस्त आय	
पिंडानयन	• पिंड ज्ञान • पिंड साधन का महत्व • लम्बाई चौड़ाई आदि की कल्पना • १६ प्रकार के गृह एवं उनके फल • हस्त विचार	१
ध्रुवांक साधन	• ध्रुवांक साधन का प्रयोजन • ध्रुवांक साधन का गणितीय उदाहरण • विविध ध्रुवाओं के नाम एवं उनका फल	१
गृहमेलापक	• गृहमेलापक के प्रकार • गृहमेलापक का प्रयोजन • गृह नक्षत्र कल्पना • गृह राशि कल्पना • अष्टकूट विचार	१
पंचांग विचार	• पंचांग विचार का प्रयोगात्मक अध्ययन • पंचांग दोष परिहार की शास्त्रीय विधि	१
वास्तु पद विचार	• विविध प्रकार के वास्तु पद • वास्तु पद ज्ञान का प्रयोजन • वास्तु पद निर्माण विधि	१
सप्तशलाका विचार	• सप्तशलाका की उपयोगिता • सप्तशलाका निर्माण विधि • सप्तशलाका फल	१
गृहायु विचार	• गृहायु विचार की उपयोगिता • गृहायु विचार की विविध विधियाँ • गृहायु निर्धारण की विधि	१
वास्तुपुरुष एवं मर्मस्थानविचार	• वास्तु पुरुष की स्थिति • मर्मस्थान ज्ञान विधि एवं उसका फल	१

चतुर्थ पत्र (द्वारादि विचार, विविध दोष एवं परिहार)

पूर्णांक - 100 **उत्तीर्णांक - 36**

शीर्षक	पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटे में)
पंचांग दोष परिहार विचार	• पंचांग दोष • पंचांग दोषों का परिहार	१
द्वार विचार	• गृहेश राशि वशात द्वार विचार • आय के अनुसार द्वार विचार • ब्राह्मण आदि वर्णों के लिए द्वार विधान • ध्रुवा के अनुसार द्वार का निर्धारण • सौर मास के अनुसार द्वार का निर्धारण • द्वार के विविध भेद • राज गृह का द्वार प्रमाण आदि	१
द्वार वेध विचार	• द्वार वेध के कारण • द्वार वेध का फल • द्वार वेध निवारण के उपाय • द्वार स्थापन चक्र • द्वार के स्वयं खुलने तथा बंद होने का फल आदि	१
शाला विचार	• शाला की परिभाषा • विविध शालाओं के भेद • एक शाल • द्विशाल • बहुशाल आदि	१
सीढ़ी एवं स्तम्भ विचार	• सीढ़ी निर्माण की विधि • सीढ़ी निर्माण में ध्यातव्य विषय • सीढ़ी की संख्या का निर्धारण • गृह में स्तम्भ विचार	१
भित्ति विचार	• भित्ति स्थापन विधि • भित्ति मान • भित्ति निर्माण में ध्यातव्य विषय	१
आलिंद विचार	• आलिंद का प्रयोजन • आलिंद विधान	१

	• आलिंद का परिमाप • आलिंद के भेद इत्यादि का विचार	
गवाक्ष विचार	• गृह निर्माण में गवाक्ष का महत्व • गवाक्ष संख्या का निर्धारण • गवाक्ष का परिमाप	१
गृह के समीप वृक्षों का रोपण	• गृह के समीप ग्राह्य वृक्ष • गृह के समीप त्याज्य वृक्ष • गृह के भीतर लगाने वाले पौधे • वृक्ष जनित दोषों का परिहार	१
कूर्मचक्रविचार	• कूर्म चक्र का प्रयोजन • कूर्म चक्र निर्माण विधि • कूर्म चक्र की उपयोगिता • कूर्म चक्र का फल	१
विविध दोष परिहार	• गृह निर्माण में जनित विविध दोष • आलिंद जनित दोष परिहार • सीढ़ी सम्बंधित दोषों का परिहार • द्वार जनित दोषों का का परिहार • गवाक्ष जनित दोषों का परिहार • अन्य गृह सम्बंधित दोष एवं उनका परिहार	१

संदर्भ ग्रंथ

- बृहद्वास्तु माला
- बृहद्संहिता
- मयमतम्
- मुहूर्तचिंतामणि
- वास्तुरत्नाकर
- भारतीय वास्तुशास्त्र
- वास्तुराजवल्लभ
- भारतीय ज्योतिष